बी.ए.कार्यक्रम

(बी.ए.जी.)
संस्कृत

सत्रीय कार्य

जुलाई 2022 एवं जुलाई 2023 सत्रों के लिए

BSKC – 132 संस्कृत गद्य–साहित्य

मानविकीविद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नईदिल्ली– 110068

बी.ए. (कार्यक्रम) संस्कृत–कोर पाठ्यक्रम

सत्रीय कार्य (2022–23)

पाठ्यक्रमकोड : **BAG/BSKC-132/2022 - 23**

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (**TMA**) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्यमेंपूरेपाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्यकाम का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकतेहैं। यहाँ पाठ्यसामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या औरअपने अध्ययन केन्द्रकाउल्लेख करेंजैसाआगेदिखायागयाहै ।

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रमकानाम/कोड : .....

सत्रीय कार्यकोड : .....

अध्ययन केन्द्रकानाम/कोड : .....

दिनाँक : .....

सत्रीय कार्यजमाकराने की तिथियाँ :

जुलाई 2022 सत्र के लिए : विश्वविद्यालय नियमानुसार

जनवरी 2023 सत्र के लिए : विश्वविद्यालय नियमानुसार

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. **अध्ययन** :सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्वनोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणी परक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए।उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

(क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

(ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

(ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति**: जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तरपुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा मेंबैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य : BSKC- 132 संस्कृत गद्य–साहित्य

पाठ्यक्रमकोड–**BSKC-132**
पाठ्यक्रमशीर्षक–संस्कृत गद्य–साहित्य
सत्रीय कार्य–**BSKC – 132/TMA/2022-2023**

पूर्णांक– 100
नोट–सभीप्रश्नअनिवार्यहैं : –

(क) व्याख्या आधारितप्रश्न :–

1. अधोलिखितगद्यांशों की ससन्दर्भव्याख्या कीजिए :– **20X2=40**

(क) कामं भवान् प्रकृत्यैव धीरः पित्रा च महता प्रयत्नेन समारोपितसंस्कारः, तरलहृदयम् अप्रतिबुद्धं च मदयन्ति धनानि । तथापि भवद्गुणसन्तोषो मामेवं मुखरीकृतवान् । इदमेव च पुनः पुनरभिधीयसे विद्वांसमपि सचेतनमपि महासत्त्वमपि अभिजातमपि धीरमपि प्रयत्नवन्तमपि पुरुषमियं दुर्विनीता खलीकरोति लक्ष्मीरिति सर्वथा कल्याणैः पित्रा क्रियमाणमनुभवतु भवान् नवयौवराज्याभिषेकमङ्गलम् कुलक्रमागतामुद्वह पूर्वपुरुषैः ऊढां धुरम् अवनमय द्विषतां शिरांसि उन्नमय स्वबन्धुवर्गम् अभिषेकानन्तरं च प्रारब्धदिग्विजयः परिभ्रमन् विजितामपि तव पित्रा सप्तद्वीपभूषणां पुनर्विजयस्व वसुन्धराम् अयं च ते कालः प्रतापमारोपयितुम् आरूढप्रतापो हि राजा त्रैलोक्यदर्शीव सिद्धादेशो भवति इत्येतावदभिधाय उपशशाम उपशान्तवचसि शुकनासे चन्द्रापीडस्ताभिरूपदेशवाग्भिः प्रक्षालित इव, उन्मीलित इव, स्वच्छीकृत इव निर्मृष्ट इव, अभिषिक्त इव, अभिलिप्त इव, अलङ्कृत इव पवित्रीकृत इव, उद्भासित इव. प्रीतहृदयो मुहूर्त स्थित्वा स्वभवनमाजगाम ।

अथवा

एवं विद्ययापि चानया दुराचारया कथमपि दैववशेन परिगृहीताः विक्लवा भवन्ति राजानः सर्वाविनयाधिष्ठानतां च गच्छन्ति । तथाहि अभिषेकसमय एव चैतेषां मङ्गलकलशजलैरिव प्रक्षाल्यते दाक्षिण्यम् अग्निकार्यधूमेनेव मलिनीक्रियते हृदयम्, पुरोहितकुशाग्र सम्मार्जनीभिरिव अपहृियते क्षान्तिः, उष्णीषपट्टबन्धेनेव आच्छाद्यते जरागमनस्मरणम्. आतपत्रमण्डलेनेव अपसार्यते परलोकदर्शनम्, चामरपवनैरिव अपहृियते सत्यवादिता, वेत्रदण्डैरिव उत्सार्यन्ते गुणाः, जयशब्दकलकलैरिव तिरस्क्रियन्ते साधुवादाः, ध्वजपट पल्लवैरिव परामृश्यते यशः ।

(ख) तस्मिन् पर्वते आसीदेको महान् कन्दरः । तस्मिन्नेव महामुनिरेकः समाधौ तिष्ठति स्म । कदा स समाधिमङ्गीकृतवानिति कोऽपि न वेत्ति ग्रामणी ग्रामीण ग्रामाः समागत्य मध्ये मध्ये तं पूजयन्ति प्रणमन्ति स्तुवन्ति च । तं केचित् कपिल इति, अपरे लोमश इति, इतरे जैगीषव्य इति, अन्ये च मार्कण्डेय इति विश्वसन्ति स्म । स एवायमधुना शिखरादवतरन् ब्रह्मचारि–बटुभ्यामदर्शि ।

अथवा

कलकलमेतमाकर्ण्य श्यामबटुरपि कन्यासमीपादुत्थाय दृष्ट्वा च हन्तुमेतं यवनवराकं पर्य्याप्तोऽयं गौरसिंह इति मा स्म गमदन्योऽपि कश्चित् कन्यकामपजिहीर्षुरिति वलीकादेकं विकटखड्गमाकृष्यत्सरौ गृहीत्वा कन्यकां रक्षन्, तदध्युषित– कुटीर निकट एव तस्थौ ।

गौरसिंहस्तु 'कुटीरान्तः कन्यकाऽस्ति सा च यवन–वध–व्यसनिनि मयि जीवति न शक्या द्रष्टुमपि किं नाम स्प्रष्टुम् ? तद् यावत् तव कवोष्ण–शोणित– तृषित एष चन्द्रहासो न चलति, तावत् कूर्दनं वा उत्फालं वा यच्चिकीर्षसि तद् विधेहि' इत्युक्त्वा व्यालीढमर्य्यादया सज्जः समतिष्ठत।

(ख) लघुउत्तरीय प्रश्न :– **6X5=30**

2. चन्द्रपीठ का चरित्र चित्रण करें ?

3. गधंकाव्य का लक्षण देते हुए उसके भेदों को स्पष्ट करें ?

4. वेतालपञ्चविंशति पर टिप्पणी लिखें?

5. महाश्वेता का चरित्र चित्रण करें ?

6. शिवराज विजय की कथावस्तु पर प्रकाश डालें ?

(ग) दीर्घउत्तरीय प्रश्न : **15X2=30**

7. दण्डी का व्यक्तित्व और कर्तृत्व बताते हुए उनके शैलीगत विशिष्ट्य को स्पष्ट करें ?

8. निम्नलिखितमें से किन्हीं तीन विषयों पर लेख लिखिए :–

(क) वासवदत्ता (ख) सुबन्धु

(ग) पञ्चतन्त्र (घ) हेतोपदेश